आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received: 11/06/2022; Accepted: 14/06/2022; Reviewed: 23/06/2022; Published: 24/06/2022

महात्मा गांधी का हिन्दी भाषा चिंतन

- डॉ .एम.आर.सिद्दगंगम्मा
हिंदी विभाग
सहायक प्राध्यापक
जे.एस.एस.कॉलेज.
ऊटी रस्ते,
मैसूर
मोबाइल-7760337553

डॉ .एम.आर.सिद्दगंगम्मा, महात्मा गांधी का हिन्दी भाषा चिंतन, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 2/जून 2022, (115-120)

सार:

महात्मागांधी जी का चिंतन मंथन का क्षेत्र बड़ा विशाल था । जैसे राजनीति, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक,शिक्षा,भाषा साहित्य और स्वराज आदि विषयों पर और उसकी समस्याओं पर महात्मागांधी जी ने अपने स्वतंत्र राय व्यक्त की । प्रस्तुत लेख गांधी जी का भाषा चिंतन पर आधारि हैं । भाषा चिंतनकार, भाषा वैज्ञानिक और भाषा साहित्यकार भाषा के बारे में चिंरन -मंतन कहते हैं । लेकिन गांधी एक भाषावैज्ञानिक नहीं फिर भी वे भारत की भाषाओं की समस्याओं पर चिंतन करते हुए ,उन्होंने हिंदी को देश की राष्ट्र भाषा बताया, जिसका विकास वे हिंदुस्तान के रूप में देखना चाहते थे। महात्मा गांधी की मातृ भाषा गुजराती थी, हिंदी नहीं थी फिर भी उन्होंने हिंदी भाषा को महत्व दिया है । उन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान उच्चकोटि का था । फिर भी भारतीय भाषाओं के प्रति उनके मन में विशेष सम्मान भावना थी। वे चाहते थे कि हर एक व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करें और उसमें कार्य करें तब मनुष्य की संस्कृति विशाल होती है। इसलिए देश में सर्वाधिक बोली जानेवाली हिंदी भाषा को भी सिखे,यह उनकी मनोकामना थी।

हिंदी भाषा के महत्व:

महात्मा गांधी अपने मातृभूमि और मातृभाषा से अटूट-स्नेह रखते थे। भारत की शिक्षा प्रणाली और दैनिक व्यवहार में हर एक दिन बढ़ते अंग्रेजी का प्रयोग से गांधी जी बहुत असंतुष्ट थे। अंग्रेजी भारत वासियों के हृदय की भाषा नही, मां की भाषा भी नहीं ,इसलिए इस भाषा में शिक्षा पानेवाले की दशाहीन स्थिति के बारे में चिंतन करते थे। इस विचार पर गांधी जी ने,- (27 अप्रैल 1921 को 'यंगइंडिया' में लिखा था) कि -"यह मेरा निश्चित मत है कि अंग्रेजी भाषा में शिक्षित भारतीयों को निर्बल और शक्तिहीन बना दिया है। इसने भारतीय विद्यार्थियों की शक्ति पर भारी बोझ डाला है और हमें नकल चीबना दिया है। कोई भी देश नकला चियों की जाती पैदा कर के राष्ट्र नहीं बना सकता।"1

गांधी का अंग्रेजी भाषा की दृष्टिकोण:

गांधी जी अंग्रेजी भाषा और साहित्य से द्वेष नहीं करते थे ।मगर भारतीय जनमानस पर उसे विराज करने की मानसिकता का कटु शब्दों में विरोध करते थे। उसके बदले अधिक भाषाओं को सीखना, वह उचित समझते थे । हर एक भाषा के ज्ञान को बहुत महत्व पूर्ण मानते थे । लेकिन अपना मातृभाषा हिंदी को समर्थन करते थे ।इसके बारे में उन्होंने विचार व्यक्त किया है कि "भारत के युवक और युवतियों अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाओं को खूब पढ़े। मगर हरगिज़ यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिंदुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाय या उनकी उपेक्षा करें या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करें कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे से ऊंचा चिंतन नहीं कर सकता ।"2

मातृभाषा के महत्व:

गांधी जी शिक्षा के माध्यम के लिए मातृभाषा को ही सर्वोत्तम मानते थे । वे चाहते थे कि भारत के हर प्रांत में शिक्षा का माध्यम प्रांतीय भाषाओं में ही होनी चाहिए । "राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा में नहीं अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं । वे आत्महत्या करते हैं । इससे उन का जन्मसिद्ध अधिकार छीन जाता है । विदेशी भाषा से बच्चों पर बोज जोर पड़ता है और उनकी सारी मौलिकता नष्ट हो जाती है । इसलिए किसी विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना मैं राष्ट्र का बड़ा दुर्भाग्य मानता हूं ।"3

राष्ट्रभाषा दृष्टि से हिंदी:

भाषा वही श्रेष्ठ है । जिसमें जनसमूह सहज से समझले, देहाती बोली सब समझते हैं। भाषा का मूल करोड़ों मनुष्य रूपी हिमालय में मिलेगा और उसमें हीर होगा ।" हिमालय में से निकलती हुई गंगा जी अनंतकाल तक

बहती रहेगी, ऐसे ही देहाती हिंदी का गौरव रहेगा और छोटी सी पहाड़ी से निकलता हुआ, झरना सूख जाता है। वैसे ही संस्कृत मयी और फारसीमयी हिंदी की दशा होगी।"4

हिंदुस्तान के प्रति गांधी जी की कल्पना यह था कि जिन में ना कोई हिंदू होगा, न मुसलमान, न सिख, न इसाई और न दलित होंगे तो केवल इंसान होंगे जिनका धर्म होगा इंसानियत यह एकता का दृष्टिकोण था। हिंदी सीखने में आसान है ।" इसके बारे में गांधी जी कहते हैं कि, हिंदी भाषा को बहुत आदमी बोलते हैं और यह भाषा सीखने और पढ़ने में सरल हैं। इसलिए यह राष्ट्रभाषा होने का अधिकार रखती है।"5 (हिंदी साहित्य सम्मेल नइंदौरअधिवेशन 20 अक्टूबर 1935) महात्मागांधी का आशय उस भाषा से था कि जिसमें हिंदी और उर्दू के अनेक तत्वों का मिश्रण हो।

हिंदी के तत्व:

हिंदी के तत्वों में प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, तत्सम और तद्भव देशी विदेशी शब्दों के साथ अनेक बोलियों और उसके अनेक उपबोलियों के शब्द मुहावरे लोकोक्ति आदि के साथ प्रचलित उर्दू फारसी तुर्की शब्द भी शामिल है। पर वह अनिवार्य रूप से देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। हिंदुस्तानी में हिंदी और उर्दू के समान तत्व का संगम है। "भारत के गांव में हिंदी भाषा के द्वारा ही सेवा संभव है। आज लोगों को राष्ट्रभाषा हिंदी सीखने लेने की प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिए ।मैं अंग्रेजी से नफरत नहीं करता पर मैं हिंदी से अधिक प्रेम करता हूं। इसलिए मैं हिंदुस्थानी के शिक्षितो से कहता हूं कि वह हिंदी को अपनी भाषा बनाले।" 6 (20 अक्टूबर 1917 कोभरूच')

स्वराज्या में हिंदी भाषा का पात्र:

गांधीजी ऐसा सोचने का एक पक्का आधार यह था कि हिंदी और उर्दू बोलचाल के स्तर पर और आम हिंदुस्तानियों और आम जनता की बोलचाल के स्तर पर लगभग एक जैसा है। दोनों भाषाओं में अंतर यह है कि हिंदी भाषा में संस्कृत शब्द मिश्रित है तो उर्दू भाषा में फारसी अरबी शब्दोंका मिश्रण है। वैसे दोनों भाषी खड़ीबोली बोलते हैं। वैसे में हिंदी को भारत की बहुसंख्यक जनता मिली-जुली भाषा बोलती है। इसलिए वे हिंदुस्तानी नाम देते थे। महात्मागांधी जी ने हिंदी प्रचार प्रसार को अपने रचनात्मक कार्यों में एक स्थान देकर उसे देश की एकता का एक सशक्त साधन बनाया था। देश की भावनात्मक एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए हिंदी के व्यापक प्रसार पर बल दिया था । हिंदी को पूरे भारत की अखंडता को बनाए रखने का जबरदस्त माध्यम बनाया था । हिंदी के प्रति गांधी जी ऐसे प्रतिबद्ध थे कि उन्हें हिंदी स्वराज्य का पर्याप्त थी । हिंदी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न था।

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है। जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने स्पष्ट बताया है कि "यदि हमें स्वराज्य का आदर्श पूरा करना है तो हमें एक ऐसी भाषा की जरूरत पड़ेगी ही जिसे देश की विशाल जनता आसानी से समझ है और सीख सकें।"7 गांधीजी देश की स्वराज और एकता के लिए हिंदी को एक माध्यम बनाकर हिंदी प्रचार प्रसार के लिए और दक्षिण उत्तर के बीच के सेतु निर्माण के लिए देश वासियों से आग्रह करते थे।

महात्मागांधी जी का विचार यह था कि भारतीय एकता के लिए और स्वतंत्रता संग्राम में अधिक जनसंपर्क करने के लिए, हिंदी को सर्वाधिक सशक्त भाषा मानते थे। हिंदी भाषा की विकास के लिए उन्होंने यह महसूस किया कि पूरे भारत देश को एक सूत्र में बांधने के लिए तथा स्वराज्य प्राप्त करने के लिए एक ऐसी भाषा की जरूरत है। जो हिंदी की होगी, हिंदुस्तान की होगी ,इस विचार में वे कहते हैं कि "हिंदुस्तानी की आम भाषा अंग्रेजी नहीं बल्कि हिंदी है। वह आपको सीखने होगी और हम तो आपके साथ अपनी भाषा में ही व्यवहार करेंगे।"8

हिंदी भाषा उत्तर-दक्षिण के सेतु

गांधी जी हिंदी को स्वराज्य का पर्याय मानकर देश के साथ–साथ हिंदी सेवा के लिए अपने आपको समर्पित किया और उत्तर-दक्षिण के बीच सेतु बनाकर, हिंदी के प्रचार-प्रसार करने के लिए अपने पुत्र देवदास गांधी को हिंदी दक्षिण भारत भेजा था। उसे भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की अधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए उन्होंने चेन्नई (मद्रास) में 1918 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की। ''राष्ट्रभाषा को राष्ट्रीय एकात्मक और स्वतंत्रता का संग्राम का हथियार बनाकर पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का जो स्वप्न महात्मागांधी ने देखा था । उनके इसी स्वप्न की परिणाम दक्षिण भारत में सभा की स्थापना से हुई। इनकी भूमिका 1918 (इंदौर के अधिवेशन मार्च 30) में बनी, जिसमें महात्मागांधी ने हिंदी के विस्तार व्रत अपने विधायक कार्यक्रम में उसे राष्ट्रभाषा बनाकर लिया और इसके लिए उन्होंने व्यापक पैमाने पर देश व्यापी प्रयत्न किया।"9

महात्मा गांधी ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक संगठन संस्थाओं की स्थापना की। हिंदी को राष्ट्रभाषा और आभीधान देकर उसके व्यापक प्रचार के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे। "मेरा विश्वास है किस भी भारतीय भाषाओं की लिपि एक ही होनी चाहिए और ऐसी लिपि देवनागरी ही हो सकती है।"10

उन्होंने अंग्रेजी मोह को हटाकर हिंदी का विशेष रूप से हिंदुस्तानी का पक्ष लिया और यह कहा कि" हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते हैं। यह राष्ट्रीय होने लायक है। वही भाषा राष्ट्रीय बन सकती है। जिसे अधिक संख्या लोग जानते हो और बोलते हो और सीखने में सुगम हो।"11 महात्मा गांधी ना केवल हिंदी भाषा और देवनागरी

लिपि के प्रबल पक्षधर थे। बल्कि उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार-प्रसार के उद्देश के लिए ही वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की थी। उनके परिणाम स्वरूप आहिंदी भाषा भाषी प्रदेशों के स्वतंत्र संग्राम सेनानियों ने हिंदी को सीख लिया था और उसे जनसंपर्क भाषा का माध्यम बनाया था।

राष्ट्रभाषा के लक्षण :

गांधी जी ने हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में प्रति स्थापित करने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे और गांधी जी बार-बार हिंदी पर जोर देते थे। अंग्रेजी के बारे में तो उनका स्पष्ट मत था कि वह भारत की राष्ट्र भाषा नहीं बन सकती। इसलिए 1915 ईस्वी में दक्षिण अफ्रीका से भारत आते ही गांधी जी ने राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए बाकायदा आंदोलन किया। "द्वितीय गुजरात शिक्षा सम्मेलन भड़ौचा 20 अक्टूबर 1987 ई. को अध्यक्ष पदसे भाषण करते समय अपनी राष्ट्रभाषा के निम्नलिखित पांच लक्षण निर्धारित किए जो निम्नलिखित:-

1.वह भाषा सरकारी नौकरों के लिए आसान होनी चाहिए।

2.उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी धार्मिक आर्थिक और राजनीति क काम-काज शक्य होना चाहिए।

3.उस भाषा को भारत के ज्यादातर लोग बोलते हो।

4.वह भाषा राष्ट्र के लिए आसान होनी चाहिए।

5.उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या अस्थाई स्थिति पर जोर न दिया जाए।"12

महात्मा गांधी जी ने सभी भारतीय भाषाओं का समादान और हिंदी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए 16 में 1942 तथा 9 अगस्त 1946 को कहा था की, महान प्रांतीय भाषाओं को उनके स्थान से चयुत करने की कोई बात ही नहीं है। क्योंकि राष्ट्रीय भाषा की इमारत प्रांतीय भाषाओं की नींव पर ही खड़ी की जाती है। दोनों का लक्ष्य एक दूसरे की जगह लेना नहीं बल्कि एक दूसरे की कमी को पूरा करना है। महात्मा गांधी के विचार महान भारतीय नेताओं की भावना हिंदी भाषा भाषी जनता की विशाल संख्या को दृष्टिगत रखा पर्याप्त चिंतन-मनन के उपरांत भारतीय संविधान निर्माताओं ने हिंदी को भारतीय संविधान में राज्य भाषा की प्रतिष्ठा प्रदान की थी।

उपसंहार:-

महात्मागांधी का भाषा चिंतन पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने का था। उनको लगता था कि पूरे देश को जोड़ने की शक्ति हिंदी भाषा में थी। इसलिए उन्होंने हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे। हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में घोषणा करके पूरे देश को जोड़ने का काम किया, एक

देश के लिए एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है। राष्ट्रभाषा के बिना देश गूंगा बन जाता है। इसलिए हिंदी उत्तर से दक्षिण तक जोड़ने वाले कड़ी है और गंगा कावेरी का संगम हिंदी भाषा से संभव है। ऐसा गांधी जी सोचते थे।

आधुनिक युग में हिंदी को आख़िल भारत के स्तर पर प्रतिस्टापित करना, उसे पूरे राष्ट्र की वाणी का गौरव प्रदान करना और हिंदी को प्रचार-प्रसार का आंदोलन का रूप देने का काम गांधी जी ने देश की एकता के लिए किया था। हिंदी प्रचार का श्रेय गांधी जी को दे सकते हैं। फिर भी हिंदी राज्य भाषा के रूप में स्वीकृत हुई। लेकिन वह एक मात्र राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृति नहीं मिली है। हम हिंदी दिवस तो हर साल मनाते हैं। लेकिन गांधी जी के आशय आभी पूरा होना बाकी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. शतमनोत्सव व्याख्यान श्रृंखला व्याख्यान ,डॉ तिप्पेस्वामी - 2018 1- पृष्ट-5, 5- पृष्ट -1, 7- पृष्ट -4, 12 पृष्ट- 7.
2. महात्मागांधी का भाषण सारिका (गांधीजी ने हिंदी भाषा के विकास केलिए जो कुछ भी भारत हिंदी प्रचार सभा हिंदी भाषा चिंतन) पुष्ट 265-22/11/2012 विनोद चंद्र पांडे विनोद 2- पृष्ट 4, 3-पृष्ट 5, 10 -पृष्ट 7.
3. महात्मागांधी का भाषा चिंतन –सुदेश गद्यकोश 14/7/2013 , 4- पृष्ट 1, 6- पृष्ट 12.
4. महात्मागांधी, हिंदी स्वराज, नया ज्ञानोदय -अंक, 82 दिसंबर 2009 (101 वी वर्ष गांठ पर हिंदी स्वराज्य की अविकल प्रस्तुति) 8- पृष्ट 112.
5. प्रोफेसर दिलीप सिह दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा दक्षिण भारत चिंतन . 9- पृष्ट 265.
6. गोपाल शर्मा हिंदी और गांधी राज्यभाषा हिंदी विचार और विश्लेषण . 11- पृष्ट 98 से.
7. भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी मजबूती-wiki Books.
8. हिंदी राष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन चुकी है---wiki Books.
9. प्रयोजनमूलक हिंदी के आधुनिक आयामा---- महेंद्र सिंह राणा .
10. संपर्क भाषा के रूप में हिंदी https://hindisarang.com-Sampark.

****